>

Title: Regarding various problems faced by farmers in the country.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): आदरणीय सभापति जी, आपने मुझे शून्यकाल के तहत किसानों की गंभीर समस्या के बारे में बोलने का अवसर दिया है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। हम सब जानते हैं कि किसान आज गंभीर अवस्था में अपना जीवनयापन कर रहा है। वह खेती अपना धर्म समझकर या अपनी मजबूरी समझकर कर रहा है। कृषि उत्पादन के लिए उपयोगी, चीजें जैसे बीज, बिजली, पानी, उर्वरक, डीजल आदि सब महंगे हो जाने के कारण उत्पादन मूल्य बढ़ा है। लेकिन कृषि उत्पादों का उचित दाम न मिलने पर आज कृषि एक घाटे का सौदा बनकर रह गई है। इसके परिणामस्वरूप किसान देश में क्रोप होली डे पर उतर आए हैं। आज किसान निराश होकर खेती छोड़ रहा है या ज्यादा डिप्रेशन में आकर खुदकुशी कर रहा है, जो सबसे बड़ी चिंता का विषय है।

महोदय, देश में कपास उत्पादन के क्षेत्र में गुजरात अव्वल नम्बर पर है। देश के कुल कपास उत्पादन का 33 प्रतिशत अकेले गुजरात करता है और वह भी बढिया क्वालिटी का, जिसकी विदेशों में विशेषकर चीन में ज्यादा मांग है। केन्द्र सरकार द्वारा कपास के निर्यात पर पाबंदी लगाने की घोषणा से कपास के दाम गिर गए तथा गुजरात के किसानों को 10000 करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ा। दाम गिरने से कपास किसानों के घरों में जमा पड़ा है तथा व्यापारियों द्वारा गिरी हुई कीमतों का फायदा उठाने से किसानों को बहुत ज्यादा नुकसान हो रहा है। एक महीने पहले केन्द्र सरकार द्वारा कई गैरवाजिब शर्तों के साथ कपास के निर्यात से पाबंदी हटाने की घोषणा से आज तक कपास का निर्यात बंद पड़ा है।

अभी थोड़े दिन पूर्व काटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया ने घोषणा की कि वे 16 अप्रैल से 4500 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से सीसीआई केन्द्रों से कपास की खरीद करेंगे। जिसके बाद परेशान किसान अपना माल बेचने के लिए रात में ही दो-तीन किलोमीटर लम्बी लाइन में खड़े हो गए। लेकिन अपनी ही घोषणा के उलट सीसीआई ने 825 रुपये प्रति बीस किलो की कम दर पर खरीद शुरू की, जिससे पीड़ित किसान आक्रोशित होकर चक्काजाम कर आंदोलन करने पर मजबूर हो गए तथा पुलिस ने आंदोलन कर रहे किसानों पर लाठीचार्ज किया।

महोदय, आपके माध्यम से मंत्री जी से मेरा निवेदन है कि नाराज़ और निराश किसानों की पीड़ा का संज्ञान लेकर सीसीआई की बंद खरीद केंद्रों को तुंत खुलवाने हेतु निर्देश दें तथा कपास की खरीद 900 रूपये प्रति 20 किलोग्राम के हिसाब से सुनिश्चित करें। साथ ही मेरा सरकार से निवेदन है कि निकास के नियमों को सरल बना कर समुचित रूप से निर्यात का प्रबंध कर तथा किसान को उचित मूल्य दे कर बचाया जाए।

सभापति महोदय:

श्री अर्जुन राम मेघवाल एवं

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी को श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण के विषय के साथ संबद्ध किया जाता है।